International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(III), January - March, 2023, pp. 215-220

भारत में पर्यावरण एवं हरित अर्थव्यवस्था

डॉ. नीरज कारगवाल*

सार

हरित अर्थव्यवस्था यानि ग्रीन इकोनॉमी में विकास के साथ पर्यावरण को भी संरक्षित रखा जाता है। हरित अर्थव्यवस्था में कार्बन के निम्नीकरण, संसाधन प्रबंधन कुशलता एवं सामाजिक रूप से समावेशी अर्थव्यवस्था पर जोर दिया जाता है। ग्रीन ग्रोथ में आर्थिक उन्नति और विकास के साथ में प्राकृतिक स्रोत बेहतर बने रहते हैं। सतत विकास के मुख्य लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पर्यावरण संरक्षण और संसाधनो का सर्वोत्तम उपयोग आवश्यक है। वर्तमान समय में मानवता के समक्ष जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता में कमी, आर्थिक एवं सामाजिक असमानता में वृद्धि जैसी अनेक अन्य गम्भीर चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। ये वैश्विक संकट पृथक रूप में हल नहीं किए जा सकते हैं क्योंकि ये सभी परस्पर अंतर–सम्बंधित हैं। हमारा आर्थिक तंत्र अभी इतना सक्षम नहीं है कि वह सामाजिक तथा पर्यावरणीय लक्ष्यों के मध्य संतुलन स्थापित कर सके। इन समस्याओं के समाधान के लिए नए आर्थिक दृष्टिकोण 'हरित अर्थव्यवस्था की अवधारणा' की आवश्यकता है। हरित अर्थव्यवस्था एक लचीली अर्थव्यवस्था है, जो पृथ्वी की पारिस्थितिक सीमाओं के भीतर सभी को समृद्धि और गुणवत्तायुक्त जीवन प्रदान करती है। यह पर्यावरणीय संतुलन एवं सतत विकास की अवधारणा के अनुरूप एवं अनुकूल है। अत सामाजिक सहभागिता द्वारा पर्यावरणीय खतरों और पारिस्थितिकीय असंतुलन को कम करने के लिए ग्रीन इकोनॉमी को बढ़ावा देना आवश्यक है। भारत में विकास सम्बंधी परियोजनाओं, पहलों, पर्यावरणीय उत्पादों में वित्तीय निवेश तथा सतत् विकास को प्रोत्साहित करने वाली नीतियों को हरित अर्थव्यवस्था संदर्भित करती है

शब्दकोशः *सतत विकास, ग्रीन ग्रोथ, कार्बन फुटप्रिंट, संसाधन संरक्षण, पर्यावरण गुणवत्ता, जलवायु परिवर्तन, इको–फ्रेंडली।*

प्रस्तावना

अध्ययन का उद्देश्य एवं अनुसंधान क्रियाविधि

हरित अर्थव्यवस्था की अवधारणा तथा भारत में ग्रीन इकोनोमी की आवश्यकता, सम्भावना, क्रियान्वयन और पर्यावरणीय प्रभाव का अध्ययन करना। इस अध्ययन के लिए विभिन्न पत्रिकाओं, शोध लेखों, वेबसाइटों, विभिन्न स्रोतों से प्रकाशित आंकड़ों से द्वितीयक आंकडे एकत्रित किये गये है। इंटरनेट पर उपलब्ध इस विषय पर विभिन्न अध्ययनों का भी इस पत्र में उल्लेख किया गया है।

हरित अर्थव्यवस्था का परिचय

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के अनुसार हरित अर्थव्यवस्था मानव कल्याण तथा सामाजिक समानता स्थापित करती है तथा पर्यावरणीय संकटों व पारिस्थितिकीय असंतुलन को न्यून करने का प्रयास करती है। यह निम्न कार्बन, संसाधन कुशल तथा सामाजिक रूप से समावेशी व्यवस्था है। सरल अर्थों में हरित अर्थव्यवस्था एक लोचशील अर्थव्यवस्था है, जो पृथ्वी ग्रह की पारिस्थितिक सीमाओं के भीतर सभी को बेहतर गुणवत्तायुक्त जीवन प्रदान करती है। हरित अर्थव्यवस्था वह होती है जिसमें सार्वजनिक और निजी निवेश करते समय इस बात को ध्यान में रखा जाए कि कार्बन उत्सर्जन और प्रदूषण कम से कम हो, ऊर्जा और संसाधनों की प्रभावोत्पादकता बढ़े तथा जो जैव विविधता और पर्यावरण प्रणाली की सेवाओं के नुकसान कम करने में मदद करे।

---

* सहायक आचार्य–भूगोल, राजकीय महाविद्यालय बीबीरानी, अलवर, राजस्थान।

- हरित अर्थव्यवस्था की दिशा में संयुक्त राष्ट्र के प्रयास– सर्वप्रथम हरित अर्थव्यवस्था शब्द का प्रयोग वर्ष 1989 में ब्रिटेन के पर्यावरणविदों द्वारा सरकार को सतत् विकास के सम्बंध में सौंपी गई एक रिपोर्ट 'हरित अर्थव्यवस्था के लिए मूल योजना' में किया गया था।
- संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम अक्टूबर, 2008 में ने एक हरित अर्थव्यवस्था की पहल प्रारम्भ की, जिसका उद्देश्य ग्रीन सेक्टर में निवेश करने तथा पर्यावरण प्रतिकूल क्षेत्रकों को पर्यावरण अनुकूल बनाने हेतु विश्लेषण एवं नीतिगत सहयोग प्रदान करना था।
- कोपेनहेगन में जून, 2009 में आयोजित संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन की एक घोषणा में अनेक संकटों के समाधान के रूप में हरित अर्थव्यवस्था का समर्थन किया गया था।
- बाली, इण्डोनेशिया में फरवरी, 2010 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के मंत्रीस्तरीय पर्यावरण मंच में स्वीकार किया कि, हरित अर्थव्यवस्था की अवधारणा वर्तमान चुनौतियों का समाधान कर सकती है तथा सभी राष्ट्रों को आर्थिक विकास व लाभ के अवसर प्रदान कर सकती है।
- रियो डि जेनेरियो (ब्राजील) में वर्ष 2012 में आयोजित संयुक्त राष्ट्र सतत विकास सम्मलेन के केन्द्रीय विषय में सतत विकास तथा निर्धनता उन्मूलन के संदर्भ में हरित अर्थव्यवस्था था। इस सम्मेलन में कहा गया कि हरित अर्थव्यवस्था संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों में सतत् विकास प्रतिबद्धताओं को लागू करने वाली नीतियों एवं कार्यक्रमों के क्रियान्वयन का एक उपकरण है।

हरित अर्थव्यवस्था की विशेषताएं

हरित अर्थव्यवस्था से तात्पर्य, एक निम्न कार्बन, संसाधन दक्षता एवं सामाजिक रूप से समावेशी अर्थव्यवस्था से है। यह वृद्धि एवं विकास का एक वैकल्पिक दृष्टिकोण है, जो सतत विकास की अवधारणा के अनुरूप एवं अनुकूल है। हरित अर्थव्यवस्था आर्थिक, पर्यावरणीय तथा सामाजिक हितों को बनाए रखने तथा उन्हें आगे बढ़ाने पर बल देती है। एक हरित अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक एवं निजी निवेश के द्वारा रोजगार एवं आय में वृद्धि इस प्रकार की आर्थिक गतिविधियों, आधारभूत संरचनाओं एवं परिसम्पत्तियों के द्वारा की जाती है, जो कार्बन उत्सर्जन एंव प्रदूषण में कमी, ऊर्जा व संसाधन कुशलता में वृद्धि तथा जैवविविधता व पारितंत्र के संरक्षण को प्रोत्साहित करें।

हरित अर्थव्यवस्था मुख्यतः पाँच सिद्धांतों का अनुसरण करती है – मानव कल्याण, समता एवं न्यायपूर्ण व्यवस्था, प्राकृतिक सीमाएं, सतत विकास एवं संरक्षण, सुशासन.

- **मानव कल्याणः** हरित अर्थव्यवस्था जन केन्द्रित होती है। इसका उद्देश्य. वास्तविक एवं साझी समृद्धि का निर्माण करना है यह ऐसी सम्पत्ति के निर्माण पर बल देती है जो न केवल वित्तीय हो बल्कि उसमें मानवीय, सामाजिक, भौतिक एवं प्राकृतिक पूँजी भी सम्मिलित हो। हरित अर्थव्यवस्था सतत् प्राकृतिक तंत्र, ज्ञान एवं शिक्षा में निवेश एवं इन तक पहुँच को प्राथमिकता देती है। ये हरित एवं उचित रोजगार के अवसर प्रदान करती है।
- **समता एवं न्यायपूर्ण व्यवस्थाः** हरित अर्थव्यवस्था समावेशी तथा गैर–भेदभावपूर्ण होती है। यह लोगों के बीच की असमानताओं को कम करते हुए उन्हें समतापूर्ण अवसर प्रदान करने पर बल देती है। हरित अर्थव्यवस्था भविष्य के हितों को ध्यान में रखते हुए सम्पत्ति निर्माण का एक दीर्घ कालिक आर्थिक दृ ष्टिकोण है जो कि वर्तमान की बहु आयामी निर्धनता तथा अन्याय का भी समाधान करती है। यह अर्थव्यवस्था एकता एवं सामाजिक न्याय, सामाजिक सम्बंधों, मानव अधिकारों, श्रमिकों एवं अल्पसंख्यकों के अधिकारों तथा सतत् विकास के अधिकार का समर्थन करती है।
- **प्राकृतिक सीमाएँः** हरित अर्थव्यवस्था प्रकृति के विभिन्न पारिस्थितिक मूल्यों की पहचान करती है तथा उन्हें पोषित करती है। जैसे– अर्थव्यवस्था को सहारा देने वाली वस्तुएँ एवं सेवाएँ प्रदान करना, विभिन्न

समाजों को जोड़ना आदि। हरित अर्थव्यवस्था प्राकृतिक पूँजी को अन्य पूँजियों के द्वारा प्रतिस्थापित किए जाने पर बल देती है ताकि महत्वपूर्ण प्राकृतिक पूँजी की हानि तथा पारिस्थितिक सीमाओं के अतिक्रमण को रोका जा सके। हरित अर्थव्यवस्था जैवविविधता, मृदा जल, वायु तथा अन्य प्राकृतिक तंत्रों की सुरक्षा, संवृद्धि तथा उनके सुधार हेतु निवेश करती है।

- **सतत विकास एवं संरक्षणः** हरित अर्थव्यवस्था की अवधारणा सतत् उपभोग के साथ सतत् उत्पादन का भी समर्थन करती है। समावेशी हरित अर्थव्यवस्था संसाधनों का संरक्षण एवं आर्थिक विकास के नए प्रतिमानों का स्वागत करती है। यह लोगों के कल्याण एवं गरिमापूर्ण जीवन के लिए आवश्यक आधारभूत वस्तुओं एवं सेवाओं के सामाजिक स्तर की पहचान करती है।
- **सुशासनः** हरित अर्थव्यवस्था एकीकृत, उत्तरदायी एवं लोचशील संस्थाओं के द्वारा निर्देशित होती है। हरित अर्थव्यवस्था स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं के लिए हस्तांतरित निर्णयन तथा पारितंत्र के प्रबंधन को प्रोत्साहित करती है। इसके साथ ही यह सशक्त, साझे, केन्द्रीकृत मानकों व प्रक्रियाओं के अनुपालन तंत्र को बनाए रखती है।

भारत के संदर्भ में पर्यावरण और ग्रीन इकोनोमी की आवश्यकता

वर्तमान समय में विश्व के समक्ष जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण अवनयन, जैव विविधता में कमी, आर्थिक एवं सामाजिक असमानता में वृद्धि जैसी अनेक गम्भीर चुनौतियाँ उत्पन्न हो चुकी हैं। ये वैश्विक संकट पृथक रूप में हल नहीं किए जा सकते हैं क्योंकि ये सभी परस्पर अंर्तसम्बंधित हैं। इन वैश्विक समस्याओं के समाधान के लिए नए आर्थिक दृष्टिकोण 'हरित अर्थव्यवस्था' की आवश्यकता है। हरित अर्थव्यवस्था की अवधारणा पृथ्वीतल की पारिस्थितिक सीमाओं के भीतर सभी को समृद्धि एवं विकास के अवसर प्रदान करती है। इसमें कार्बन निम्नीकरण, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन एवं विवेकपूर्ण उपयोग सहित सामाजिक समानता और कल्याण को दृ ष्टिगत रखा जाता है। हरित अर्थव्यवस्था में विकास सम्बंधी विभिन्न नवाचारों, परियोजनाओं, वित्तीय निवेश, इको–फ्रेंडली उत्पादन प्रक्रिया सहित, सतत् विकास को प्रोत्साहित करने वाली नीतियों को प्राथमिकता प्रदान की जाती है। हरित अर्थव्यवस्था को सतत विकास एवं निर्धनता उन्मूलन का माध्यम माना जा रहा है क्योंकि अर्थव्यवस्था एवं पर्यावरण को सामाजिक पक्षों से मुक्त नहीं किया जा सकता है। 'ग्रीन इकोनोमी और ग्रीन ग्रोथ' –आज के बदलते परिदृश्य में नये बाजार एवं निवेशकों की मांग व प्राथमिकता बन रही है।

संयुक्त राष्ट्र मंच, न्यूयार्क में जुलाई, 2019 में सतत विकास पर प्रपत्र – समावेशी हरित अर्थव्यवस्थाओं के लिए सिद्धांत, प्राथमिकताएँ एवं साधन शीर्षक से प्रस्तुत किया गया इसके अनुसार, आने वाले दशकों में मानवता के समक्ष जलवायु परिवर्तन. जैव विविधता में हास, आर्थिक एवं सामाजिक, असमानता में वृद्धि जैसी अनेक अन्य गम्भीर चुनौतियाँ उत्पन्न होगी। ये वैश्विक संकट पृथक रूप में हल नहीं किए जा सकते हैं क्योंकि ये सभी परस्पर अंतर–सम्बंधित हैं। हमारा आर्थिक तंत्र अभी इतना सक्षम नहीं है कि वह सामाजिक लक्ष्यों तथा पर्यावरणीय लक्ष्यों के मध्य एक संतुलन स्थापित कर सके। उपर्युक्त समस्याओं के समाधान के लिए नए आर्थिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। हरित अर्थव्यवस्था की अवधारणा पृथ्वी की पारिस्थितिक सीमाओं के भीतर सभी को समृद्धि प्रदान करती है। यह तथ्यपरक बिंदु है कि हर देश के लिए ग्रीन ग्रोथ का मुख्य मॉडल, भौगोलिक तथा सामाजिक संरचना के अनुरूप अलग–अलग क्रियान्वित होता है

'ग्रीन जीडीपी'– ग्रीन जीडीपी का मतलब पारंपरिक सकल घरेलू उत्पाद के उन आँकड़ों से है, जो आर्थिक गतिविधियों में पर्यावरणीय तरीकों को स्थापित करते हैं अर्थात वह देश सतत विकास की दिशा में आगे बढ़ने के लिये किस सीमा तक तैयार है और यह पारंपरिक जीडीपी का प्रति व्यक्ति कचरा और कार्बन के उत्सर्जन का पैमाना है। भारत की पर्यावरणीय विविधता और समृद्धि को सार्वभौमिक रूप से पहचाना जाता है और अब आवश्यकता अनुरूप देश की पर्यावरणीय संपदा के जिला स्तरीय आँकड़ों की गणना प्रारम्भ की जा रही है।

भारत में पर्यावरण की कई समस्या एवं चुनौतियाँ

विशेषज्ञों के अध्ययन के अनुसार, अपने पर्यावरण के मुद्दों को संबोधित करने और अपने पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार लाने में भारत दुनिया में काफी तेजी से प्रगति कर रहा है। फिर भी, भारत विकसित अर्थव्यवस्थाओं वाले देशों के स्तर तक आने में इसी तरह के पर्यावरण की गुणवत्ता तक पहुँचने के लिए एक लंबा रास्ता तय करना है। भारत के लिए एक बड़ी चुनौती और अवसर है। पर्यावरण की समस्या का, बीमारी, स्वास्थ्य के मुद्दों और भारत के लिए लंबे समय तक आजीविका पर प्रभाव का मुख्य कारण हैं। पर्यावरण के मुद्दों के बारे में कारण के रूप में आर्थिक विकास को उद्धृत किया जाता है। तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या व आर्थिक विकास और शहरीकरण व औद्योगीकरण में अनियंत्रित वृद्धि, बड़े पैमाने पर औद्योगीक विस्तार तथा तीव्रीकरण, तथा जंगलों का नष्ट होना इत्यादि भारत में पर्यावरण संबंधी समस्याओं के प्रमुख कारण हैं। अन्य पर्यावरणीय मुद्दों में वन और कृषि–भूमिक्षरण, संसाधन रिक्तीकरण, पर्यावरण क्षरण, सार्वजनिक स्वास्थ्य, जैव विविधता में कमी, पारिस्थितिकी प्रणालियों में लचीलेपन की कमी, गरीबों के लिए आजीविका सुरक्षा शामिल हैं।

UNFPA द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार अप्रैल 2023 भारत दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाला देश हो गया है। भारत का अपने प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव काफी बढ़ गया है। जिससे कई क्षेत्रों पर जल संकट, मिट्टी का कटाव, वनों की कटाई, वायु और जल प्रदूषण के कारण बुरा असर पड़ता है। ग्रीन ग्रोथ पर काम करने वाली संस्था व्ब्ब्व के मुताबिक भारत की जीडीपी ग्रीन ग्रोथ के प्रारम्भिक दौर से गुजर रहा है. भारत में टोटल बिल्ट अप एरिया और शहरी ग्रीन स्पेस मेंपिछले तीस वर्षों में अस्सी फीसदी से अधिक बढ़त दर्ज की गयी है तथा साथ ही भारत के महानगरों की लगभग सौ प्रतिशत जनता तय किये गए मानक से ऊपर प्रदूषण के प्रभाव को झेल चुकी है। भारत भी एक बड़ा कार्बन उत्सर्जक देश है। इसलिए भारत को अपने अभीष्ट राष्ट्रीय निर्धारित योगदान की प्राप्ति हेतु हरित वित्त की भी आवश्यकता है।

भारत की पर्यावरणीय समस्याओं में विभिन्न प्राकृतिक खतरे, विशेष रूप से चक्रवात और वार्षिक मानसून बाढ़, जनसंख्या वृद्धि, बढ़ती हुई व्यक्तिगत खपत, औद्योगीकरण, ढांचागत विकास, पुरातन कृषि पद्धतियां और संसाधनों का असमान वितरण हैं। पूर्वोत्तर राज्यों के वन तेजी से नष्ट हो रहे हैं। वनों की कटाई ईंधन के लिए लकड़ी और कृषि भूमि के विस्तार के लिए हो रही है। यह प्रचलन औद्योगिक और मोटर वाहन प्रदूषण के साथ मिल कर वातावरण का तापमान बढ़ा देता है जिसकी वजह से वर्षण का स्वरुप बदल जाता है और सूखे की आवृत्ति बढ़ जाती है।

शहरीकरण एक वैश्विक परिघटना है, लेकिन यह भारत जैसे विकासशील देशों में तेजी से बढ़ रहा है। भारत जैसे उभरते देशों में शहरीकरण द्वारा पेश किए गए अवसरों का उपयोग करके अर्थव्यवस्था को बदलने की क्षमता है, जो मुख्य रूप से बढ़ती जनसंख्या और त्वरित औद्योगीकरण से प्रेरित है। हालाँकि, शहरीकरण में यह वृद्धि जलवायु में भारी बदलाव ला रही है। शहरी क्षेत्र वायु, जल और मृदा प्रदूषण के बढ़ते स्तर के लिए जिम्मेदार हैं। शहरों में वाहनों से अत्यधिक कार्बन उत्सर्जन, शहरी फैलाव के कारण स्थानिक भीड़भाड़ और कुप्रबंधन के कारण भूजल की कमी अति शहरीकरण के कुछ नकारात्मक प्रभाव हैं। बड़े भारतीय शहरों में बढ़ती जनसंख्या न केवल ऊर्जा, जल और परिवहन के समग्र बुनियादी ढांचे और प्रबंधन पर भारी बोझ डालती है।

भारत को हरित अर्थव्यवस्था की ओर पूर्ण संक्रमण में अभी लम्बा समय लगेगा परन्तु कुछ देशों ने हरित वृद्धि अथवा निम्न कार्बन जैसी आर्थिक रणनीतियाँ अपनाकर विश्व के अन्य देशों के समक्ष नेतृत्व का प्रदर्शन किया है। ऐसे सफल एवं वृहद स्तरीय कार्यक्रमों के अनेक उदाहरण हैं, जिनके माध्यम से संवृद्धि एवं उत्पादकता में सतत रूप से वृद्धि दर्ज की गई है। कोरिया गणराज्य ने हरित संवृद्धि हेतु एक पंचवर्षीय योजना अपनायी, इसके अंतर्गत उसने अपने सकल घरेलू उत्पाद दो प्रतिशत नवीकरणीय ऊर्जा, ऊर्जा दक्षता, स्वच्छ तकनीकी तथा जल आदि हरित क्षेत्रों में निवेश किया और एक वैश्विक हरित संवृद्धि संस्थान भी गठित किया जिसका उद्देश्य अन्य देशों को हरित संवृद्धि रणनीतियों के विकास में सहायता करना है।

भारत में ग्रीन इकोनोमी के क्षेत्र में प्रयास एवं क्रियान्वयन भारत में 'ग्रीन स्किलिंग' प्रोग्राम भी लॉन्च किया है जिसके तहत युवा, विशेष रूप से स्कूल छोड़ चुके युवाओं को 'हरित नौकरियों' की एक श्रेणी में प्रशिक्षित किया जाएगा। इन्हें वैज्ञानिक उपकरणों के ऑपरेटर के रूप में पर्यावरण की गुणवत्ता को मापने के साथ प्रकृति पार्कों में फील्ड स्टाफ और पर्यटक गाइड के रूप में प्रयुक्त किया जाएगा। सर्वेक्षण के लिये आवश्यक श्रमिक भी हरित–कुशल श्रमिकों से प्राप्त किये जाएंगे। हरित ऊर्जा की दिशा के अंतर्गत हाइड्रोजन ऊर्जा मिशन में हरित ऊर्जा स्रोतों से हाइड्रोजन उत्पन्न करना शामिल है, जिसमें परिवहन क्षेत्र को बदलने की क्षमता है। यह भारत में स्वच्छ ईंधन के उपयोग को भी बढ़ावा देगा। हरित हाइड्रोजन पर बजट जोर तकनीकी प्रगति और खनिजों की बैटरी और ऊर्जा भंडारण के लिए दुर्लभ पृथ्वी तत्वों पर निर्भरता कम करने के दीर्घकालिक लक्ष्य के अनुरूप है। भारत में सार्वजनिक परिवहन प्रणाली के काम करने के तरीके को बदलने के लिए पहल का उद्देश्य सार्वजनिक–निजी भागीदारी के माध्यम से व्यक्तिगत वाहनों पर निर्भरता को कम करना और कार्बन फुटप्रिंट को कम करना है। भारत डीप ओशन मिशन में गहरे समुद्र का सर्वेक्षण और अन्वेषण करेगा और साथ ही गहरे समुद्र की जैव विविधता की रक्षा करने वाली परियोजनाओं को पूरा करेगा। शहरी स्वच्छ भारत मिशन में खाद, कीचड़ और सीवेज उपचार के एकीकृत प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करते हुए निर्माण और विध्वंस गतिविधियों से कचरे का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करना और अपशिष्ट स्रोतों का वर्गीकरण, डिस्पोजेबल प्लास्टिक और वायु प्रदूषण में कमी करना आदि कार्य हैं।

ग्रीनर उत्पादों के लिए उपभोक्ता द्वारा वरीयता देने पर एक अध्ययन के अनुसार नई पीढ़ी टिकाऊ उत्पादों के बारे में जागरूक है। उपभोक्ता उन कंपनियों से उत्पाद खरीदना पसंद करते हैं जो कचरे में कमी, कार्बन फुटप्रिंट में कमी, टिकाऊ पैकेजिंग, नैतिक श्रम प्रथाओं के प्रति प्रतिबद्धता और मानवाधिकारों के प्रति सम्मान पर जोर देती हैं। महामारी ने पर्यावरण के प्रति लोगों की जागरूकता को और बढ़ा दिया है। उपभोक्ता अब रिसाइकिल योग्य प्लास्टिक पैकेजिंग और फाइबर–आधारित पैकेजिंग का विकल्प चुन रहे हैं क्योंकि वे पर्यावरणीय कचरे को कम करते हैं। वे उत्पादों या सेवाओं को स्विच करते हैं जब कंपनी स्थिरता मूल्यों पर कम स्कोर करती है, जो खिलाड़ियों को हरित उत्पादों के पक्ष में नया करने के लिए बाजार के अवसर प्रस्तुत करती है। कई कंपनियों ने टिकाऊ विकास के लिए खुद को प्रतिबद्ध किया है और टिकाऊ पैकेजिंग सामग्री का विकल्प चुना है। दस शीर्ष उपभोक्ता उत्पाद कंपनियों ने अगले दस वर्षों तक शत प्रतिशत टिकाऊ पैकेजिंग हासिल करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है।

संभावित बाधाएं

भारत दुनिया भर में सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में उभर रहा है। यह वर्तमान में सकल घरेलू उत्पाद द्वारा विश्व स्तर पर छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और एशिया में तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।अपने विकास लक्ष्यों को पूरा करने के लिए, भारतीय अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ना जारी रखना चाहिए। हालाँकि, विकास के पर्यावरणीय परिणाम बहुत बड़े हो सकते हैं क्योंकि यह खनिज, पानी और जीवाश्म ईंधन जैसे प्राकृतिक संसाधनों को गंभीर रूप से नष्ट कर देगा, जिससे ईंधन, ऊर्जा और कच्चे माल की कीमतों में वृद्धि होगी। राष्ट्रीय नीति निर्माण में दो मुख्य बाधाएं सार्वजनिक ऋण और राजकोषीय घाटे का प्रबंधन, हरित विकास के लिए आवश्यक तकनीकी परिवर्तनों को बाधित कर सकता है। इसके अतिरिक्त, व्यापार संतुलन व्यापक आर्थिक नीतियों में एक प्रमुख भूमिका निभाएगा। इसलिए ऊर्जा, व्यापार और आय जैसे प्रमुख क्षेत्रों में हरित विकास हस्तक्षेपों के विकास लाभों को समझना और अधिकतम करना आवश्यक है।

निष्कर्ष

सर्वाधिक तेज विकास दर के बावजूद विश्व के अन्य कई देशों की तरह ही भारत की अर्थव्यवस्था भी कई मोर्चों पर चुनौतियों का सामना कर रही है। कृषिगत, ग्रामीण अर्थव्यवस्था की स्थिति, रोजगार सृजन की चुनौतियाँ और कई आर्थिक क्षेत्रों में कमजोर प्रदर्शन भारत की मुख्य समस्याएँ हैं। अर्थव्यवस्था, रोजगार और कृषि क्षेत्र तीनों ही एक–दूसरे से कुछ इस प्रकार से जुड़े हुए हैं कि किसी एक में भी लाया गया बदलाव औरों को

प्रभावित करता है। किसी भी तंत्र द्वारा बेहतर कार्य निष्पादन क्षमता के लिये यह आवश्यक है कि इसके सभी अंग एक–दूसरे से समन्वित ढंग से जुड़े हों। अर्थव्यवस्था, समाज और कृषि को एक साथ मिलाकर ही हम वास्तविक संवृद्धि पा सकते हैं। विकास की गति बनाए रखने के लिये प्रचलित तरीकों में बदलाव लाते हुए एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण करने की आवश्यकता है जो इन्हें एक–दूसरे के प्रति उत्तरदायी बना सके।

भारत को जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभाव को कम करने और दीर्घकालिक सतत और समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए आर्थिक सुधार के साथ ग्रीन इकोनोमी अपनानी चाहिए। देश को हरित अर्थव्यवस्था में संक्रमण में सहायता करने वाले क्षेत्रों में निवेश को प्राथमिकता देनी चाहिए। हरित अर्थव्यवस्था हाल ही में वैश्विक सतत विकास एजेंडे पर एक महत्वपूर्ण अवधारणा के रूप में उभरी है। पिछले एक दशक में, भारत की तीव्र वृद्धि ने नौकरी के अवसर पैदा किए हैं और जीवन स्तर में सुधार करने में मदद की है। इसी प्रकार आगे भी हरित और डीकार्बोनाइज्ड अर्थव्यवस्था को प्राप्त करने के लिए बड़े कदम उठाने की आवश्यकता है। बदलते हुए परिवेश ने उपभोक्ताओं का ध्यान हरित अर्थव्यवस्था की ओर मोड़ दिया है, जिससे ब्रांड डिफॉल्ट रूप से स्थिरता का सहारा लेते हैं।

भारत लंबे समय से सतत विकास के लक्ष्य पर अग्रसर रहा है। इसके मूलभूत सिद्धांत को अपने विभिन्न विकास नीतियों में शामिल किया जाता रहा है। यदि भारत सतत विकास के लक्ष्यों को वर्ष 2030 तक प्राप्त कर लेता है तो भारत एक विकसित तथा समृद्ध राष्ट्र बन सकता है। भारत ने विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत एजेंडा 2030 के एक महत्वपूर्ण लक्ष्य के रूप में गरीबी को दूर करने के उद्देश्य से कार्यान्वित की जा रहे अनेक कार्यक्रम सतत विकास कार्यक्रम लक्ष्यों के अनुरूप है। आगामी बीस वर्षों तक देश के अवसंरचना सम्बंधी वित्तपोषण के लिए, नवीकरणीय ऊर्जा के उत्पादन, इलेक्ट्रिक वाहन कार्यक्रम के लिए, अफोर्डेबल अर्थात वहनीय हरित आवासों के लिए लगभग एक ट्रिलियन डॉलर की आवश्यकता होगी। ग्रीन इकोनोमी वातावरण और पानी की स्वच्छता के साथ–साथ जैव–विभिन्नता का भी पूरा खयाल रखता है। यह उन वैकल्पिक संसाधनों की खोज भी करता है जिसका इस्तेमाल प्राकृतिक स्रोतों की जगह हो सकता है। इससे प्राकृतिक संसाधनों की अक्षयता बनी रहती है. आज के बदलते परिदृश्य में ग्रीन इकोनोमी को नये बाजार की मांग भी मानी जा रही है। कई निवेशक इस ओर कदम बढ़ाते दिख रहे हैं, हालांकि एक तथ्यपरक बात यह निकल कर सामने आई है कि हर देश के लिए ग्रीन इकोनोमी का मेन मॉडल अलग–अलग होगा। यह मॉडल कैसा होगा वह उस देश के भौगोलिक सामाजिक संरचना पर बेहद निर्भर होगा। वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम में भारत ने सुनिश्चित किया है कि अगले पच्चीस सालों में देश ग्रीन ग्रोथ हासिल कर लेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Brian Milani: Designing the Green Economy
2. Muammar Al Gathafi: The Green Book
3. Krishnan N R: A Green Economy- India's Sustainable Development
4. Per Espen Stones: Tomorrow's Economy
5. Sustainable Entrepreneurship and Invest in Green Economy
6. Bill Adams: Green development in Developing World
7. Sonia Shah: The Next Generation Migration
8. Yadav A: Sustainable Development Goals and India (Hindi essay)
9. https://www.unep.org/explore-topics/green-economy
10. https://en.wikipedia.org/wiki/Green_economy
11. https://www.aranca.com/knowledge-library/articles/india-as-a-green-economy
12. https://www.worldbank.org/en/news/feature/india-environment-challenges-promote-development
13. https://sustainabledevelopment.un.org/topics/greeneconomy
14. https://www.oecd.org/greengrowth/green-growth-indicators/
15. https://www.greeneconomycoalition.org/

❖◆❖